अधिक आमदनी के लिए खजूर की खेती

- खजूर शुष्क क्षेत्र में उच्च लाभांश अर्जित करने वाली संभावित फसलों में से एक है।
- कार्बोहाइड्रेट (70–80 प्रतिशत) के प्रचुर मात्रा में पाए जाने के कारण खजूर को त्वरित ऊर्जा का सबसे अच्छा स्रोत माना जाता है।
- खजूर आवश्यक और महत्वपूर्ण फाइटोकेमिकल्स में समृद्ध है।
- खजूर को दीर्घकालीन गर्म शुष्क ग्रीष्म ऋतु तथा मध्यम शीत ऋतु और फल पकते समय (जुलाई–अगस्त) वर्षा रहित जलवायु की आवश्यकता होती है।
- देश का यह रेगिस्तानी क्षेत्र इस तरह की आवश्यकता को पूरा करता है।
- खजूर, लवणता और सूखे को भी काफी हद तक सहन कर सकता है।
- इसकी अगेती किस्में जैसे हलावी, बरही और खुनेजी ताजा फल खाने हेतु जबकि मेड्जूल और खदरावी सुखाने और प्रसंस्करण के लिए उपयुक्त हैं।

खेती प्रबंधन

- एक आदर्श खजूर के बगीचे में पेड़ से पेड़ तथा कतार से कतार की दूरी 8 मीटर रखते हुए प्रति हेक्टेयर 156 पेड़ समायोजित किये जाते हैं।
- खजूर की सफल खेती के लिए ड्रिप प्रणाली से सिंचाई, कृत्रिम परागण, सकर्श और पुरानी पत्तियों को समय समय पर हटाना, कुछ फलों की थिनिंग और फल गुच्छों की बैगिंग अति आवश्यक हैं।

आर्थिक अनुमान

- रोपण सामग्री पर 70 प्रतिशत अनुदान के साथ नये खजूर बाग की स्थापना करने में लगभग रु 3.8 लाख प्रति हेक्टेयर की लागत आती है।
- रोपण के तीसरे वर्ष फल आना शुरू हो जाता है और लगभग 3000 कि.ग्रा. प्रति हेक्टर की उपज मिल जाती है।
- पांच वर्ष के उपरांत आर्थिक उपज लगभग 10–12 टन प्रति हेक्टेयर तक प्राप्त होती है।
- ताजे फल से लगभग रु 4.8 लाख प्रति हेक्टेयर प्राप्त हो सकता है।
- बाजार भाव के अनुसार पांच वर्ष पश्चात लगभग रु 3.5 लाख प्रति हेक्टेयर तक शुद्ध लाभ प्राप्त हो सकत है।

योगदान: **अकथ सिंह एवं प्रवीण कुमार**
भाकृअनुप–केन्द्रीय शुष्क क्षेत्र अनुसंधान संस्थान
जोधपुर 342 003 (भारत)
www.cazri.res.in

काजरी फैक्टशीट: 2021

CAZRI®
Enhancing resilience of arid lands